8

चंद्रगहना से लौटती बेर

आपने गाँव की खूबसूरती को देखा है। खुले-खुले खेत, झूमती फसलें, लहराते तालाब, चमकती चाँदनी, चहकते पक्षी और प्रकृति के अनेक सुंदर दृश्य हमारे मन में हलचल मचाते हैं। इन्हें देखकर बड़ा आनंद आता है। देखने के बाद सामान्य व्यक्ति उन्हें भूल भी जाते है, किंतु कवि का देखना औरों के देखने से अलग होता है। कवि किसी भी दृश्य का सूक्ष्म अवलोकन करता है, वह उन दृश्यों को अपने शब्दों में पिरो लेता है और ऐसा आकर्षक बना देता है कि पाठक या श्रोता आनंदित हो उठते हैं। हमने और आपने भी खेतों में कई प्रकार की फसलें देखी हैं, गाँव के पोखर भी देखे हैं, वसंत का आनंद भी लिया है, लेकिन कवि ने जिस ढंग से इन दृश्यों को उतारा है, वह बिल्कुल निराला है— ऐसा निराला कि कविता पढ़ते समय वे दृश्य हमारी आँखों के सामने सजीव हो उठते हैं, हमें आनंदित कर देते हैं। कवि ने कैसे उभारा है इन दृश्यों को, आइए पढ़ते हैं कविता— चंद्रगहना से लौटती बेर।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- गाँव के प्राकृतिक दृश्यों के बारे में बता सकेंगे;
- ग्रामीण परिवेश में ब्याह-शादी के दृश्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रकृति-चित्रण के माध्यम से समाज के भिन्न-भिन्न व्यवहारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- तालाब के दृश्य और उसमें घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- महत्त्वपूर्ण स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता का भाषा-सौंदर्य स्पष्ट कर सकेंगे।

टिप्पणी

8.1 मूल पाठ

चंद्रगहना से लौटती बेर

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो–
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी;

फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी!

चंद्रगहना – गाँव का नाम
बीते के बराबर – छोटा-सा (बालिश्त भर)
ठिगना – छोटा, नाटा
मुरैठा – पगड़ी
अलसी – एक तिलहन का पौधा
हठीली – ज़िद्दी
सयानी होना – (i) समझदार होना (ii) युवती होना (iii) चतुर होना
हाथ पीले होना – विवाह होना
फाग – होली के मौसम में गाया जाने वाला लोकगीत
स्वयंवर – विवाह की वह प्रथा जिसमें युवती स्वयं अपना वर चुनती है
अनुराग – स्नेह, प्रेम
अंचल – आँचल
विजन – निर्जन
पोखर – छोटा तालाब
लहरियाँ – पानी में उठने वाली छोटी-छोटी लहरें
नील तल – नीले रंग की सतह
चाँदी का बड़ा-सा
गोल खंभा – पानी में चंद्रमा की परछाई या प्रतिबिंब
चकमकाता – चौंधियाता, चकाचौंध पैदा करता
श्वेत – सफ़ेद, उजला
चटुल – चतुर, चालाक
गगन – आकाश, आसमान

टिप्पणी

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल—
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

— केदारनाथ अग्रवाल

मीन – मछली
ध्यान निद्रा–ध्यान रूपी निद्रा, ध्यान में डूबा हुआ-सा
चट – तुरंत
झपाटे मारना – झपटना

8.2 आइए, समझें

8.2.1 अंश-1

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो–
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

कविता पढ़ते हुए यह आप जान गए होंगे कि इसमें प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है। कवि चंद्रगहना नामक किसी स्थान से लौटा है। लौटते हुए निर्जन खेतों में उसने प्रकृति के मोहक सौंदर्य के अनेक दृश्य देखे हैं और उन्हें अपनी कविता में चित्रित किया है। आइए, इसे ठीक से समझने के लिए इस कविता की प्रारंभ की 25 पंक्तियाँ एक बार फिर से पढ़ लें।

कविता के प्रारंभ में पहली ही पंक्ति में कवि मानो सूचना दे रहा है–'मैं चंद्रगहना देख आया।' लौटते हुए खेत की मेंड़ पर अकेला बैठा हुआ वह खेत और उसके आस-पास के दृश्यों को देख रहा है। सबसे पहले उसका ध्यान खेत में उगे हुए चने की ओर जाता है। चने के पौधे का आकार छोटा होता है। चने में गुलाबी रंग के फूल आ गए हैं। कवि को लगता है, यह छोटे-से कद का, बित्ते भर का चना अपने सिर पर गुलाबी पाग (पगड़ी) बाँधे, सजे-सँवरे दूल्हे-सा खड़ा है।

चना और अलसी दोनों एक ही खेत में पास-पास खड़े हैं। अलसी का पौधा दुबला-पतला और लचीला होता है इसलिए हवा से हिलता-डुलता रहता है। कविता में अलसी के तीन विशेषण दिए हैं— वह हठीली है, वह देह की पतली है और उसकी कमर लचीली है। वह पतली होने के कारण हिलती तो रहती है लेकिन तन कर सीधी भी हो जाती है। तन कर सीधी खड़ी रहती है इसीलिए हठीली भी है। उसके सिर पर कुछ बड़े गोल आकार की डोंड़ियाँ होती हैं, जो फूलती हैं और उन्हीं में बीज बनता है। अलसी का फूल नीले रंग का होता है। अलसी को देखकर कवि को लगता है कि यह दुबली-पतली लड़की है, जो मचलती दिख रही है और मानो कह रही है, 'जो मुझे छू लेगा, मैं उसे

टिप्पणी

अपना हृदय दे दूँगी। उससे प्यार करने लगूँगी। उसी की हो जाऊँगी'। हठीली होने के बावजूद वह प्यार के लिए लालायित है।

'और सरसों की न पूछो'—किसी के निरालेपन की बात करनी होती है तो हम बात ऐसे ही शुरू करते हैं-'अरे, शोभा की न पूछो। उसकी तो बात ही कुछ और है।' या 'शलभ की बात न पूछो, उस जैसा तो कोई है ही नहीं।' इसी अंदाज़ में कवि कहता है—'और सरसों की न पूछो !' सरसों अब सयानी हो गई है। 'सयानी होना' के तीन अर्थ हैं—एक तो समझदार होना, दूसरा यौवन पा लेना और तीसरा चतुर होना। यहाँ सरसों के विषय में उसे सयानी कह कर कवि ने युवती होने की ओर संकेत किया है और बताया है कि वह विवाह-योग्य हो गई है इसीलिए उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं। हाथ पीले करना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ शादी कर लेना है।

कवि ने सरसों के प्रसंग में ही 'हाथ पीले करना' का प्रयोग क्यों किया? क्योंकि सरसों जब फूलती है तो पूरा खेत ही पीला हो जाता है। तो पीली सरसों ब्याह के मंडप में पधार चुकी है। वहाँ गुलाबी साफा बाँधे चना पहले से ही बैठा है। विवाह की हलचल में फागुन का महीना कैसे चुप रहता? वह 'फाग' गाता हुआ आ पहुँचा है। फाग का गाना, चने का सजना, सरसों का हाथ पीले करना, इन सबमें एक-दूसरे का हो जाने की ललक है।

इस पूरे दृश्य में कवि को लगता है, जैसे स्वयंवर हो रहा है। (किसका ? सरसों का।) जिस प्रकार माँ विवाह-मंडप में कन्या के ऊपर स्नेह भरे आँचल की छाँह करती है, उसी प्रकार यहाँ प्रकृति माँ की भूमिका निभा रही है। प्रकृति का अनुराग भरा आँचल हिल रहा है!

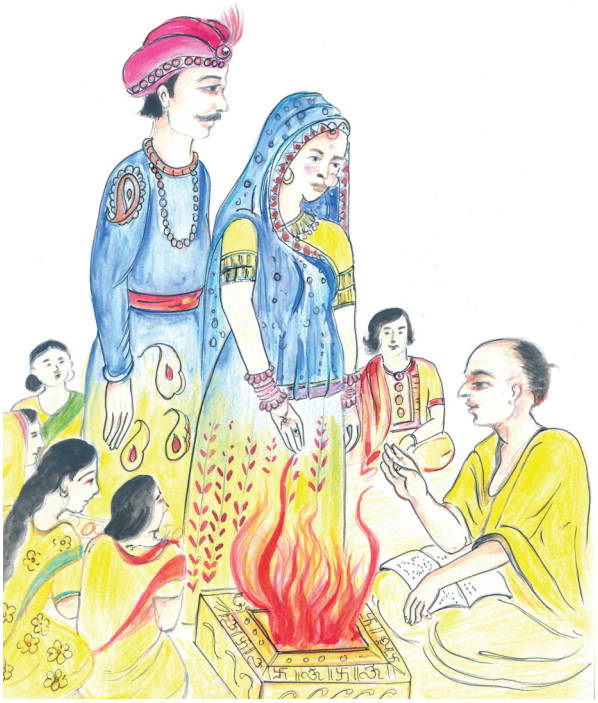

चित्र 8.1

यह दृश्य कवि के मन को छू लेता है। उसे लगता है इस ग्रामीण अंचल में किसी नगर की अपेक्षा अधिक प्यार भरा वातावरण है। नगर तो व्यावसायिक हो गए हैं। व्यावसायिक नगरों में प्यार कम उपजता है। ग्रामीण अंचल की भूमि प्रेम-प्यार के लिए अधिक उपजाऊ है। जैसे कि इस निर्जन अंचल में भी प्रकृति के चप्पे-चप्पे में प्यार दिखाई पड़ रहा है।

टिप्पणी

क्या आपने एक बात पर ध्यान दिया? अलसी, सरसों आदि वनस्पतियाँ हैं, परंतु कवि ने उन्हें मनुष्यों जैसी क्रियाएँ करते दिखाया है। चना पगड़ी बाँधे खड़ा है। पतली कमर वाली अलसी कह रही है–'मुझे छुओ तो हृदय का दान दे दूँ।' सरसों ब्याह-मंडप में हाथ पीले किए बैठी है। फागुन फाग गा रहा है। जहाँ कवि जड़ प्रकृति या वनस्पति- जगत को चेतन मनुष्य जैसा व्यवहार करते दिखाता है, उसे **मानवीकरण** कहते हैं। मानवीकरण से कविता में सुंदरता आ जाती है। इसे ही **मानवीकरण अलंकार** भी कहते हैं।

यहाँ मानवीकरण के अतिरिक्त एक और सुंदर विधान है। इस पूरे प्रकरण में एक विवाह के मंडप का रूपक है। विवाह के शुभ अवसर पर दूल्हा और उसके परिवार के पुरुष सदस्य गुलाबी पगड़ी बाँधते हैं, लड़कियाँ सज-सँवर कर फूल लेकर अगवानी और छेड़छाड़ करती हैं, कन्या ब्याह-मंडप में लाई जाती है और रात भर लोक गीत गाए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न-8.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने चने को गुलाबी मुरैठा बाँधे बैठा हुआ क्यों कहा है?

   (क) चना बहुत प्रसन्न है ☐ (ख) चना विवाह के लिए तैयार है ☐

   (ग) चना पकने को है ☐ (घ) चने को मिलने जाना है ☐

2. हृदय का दान से क्या अभिप्राय है?

   (क) हृदय का इलाज कराना ☐ (ख) प्यार करना ☐

   (ग) भला चाहना ☐ (घ) इज्जत देना ☐

3. 'फाग गाता मास फागुन आ गया है' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है।

   (क) यमक ☐ (ख) उपमा ☐

   (ग) मानवीकरण ☐ (घ) रूपक ☐

4. 'प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है'–किसके लिए कहा गया है?

   (क) सरसों के लिए ☐ (ख) व्यापारिक भूमि के लिए ☐

   (ग) ग्रामीण परिवेश के लिए ☐ (घ) अलसी के लिए ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-8.1

मानवीकरण क्या है– यह आप समझ ही चुके हैं। विभिन्न ऋतुओं के आने पर प्रकृति में परिवर्तन होता है। नीचे ऐसी ही कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। उनका मानवीकरण कीजिए।

	स्थिति	मानवीकरण
(क)	वसंत ऋतु में पेड़ में नए पत्ते आना	.....
(ख)	सावन में मेघों का गर्जना	.....
(ग)	सर्दी में कोहरा पड़ना	.....
(घ)	गर्मियों में लू चलना	.....

8.2.2 अंश - 2

आइए, पहले कविता की शेष पंक्तियों को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं। इन पंक्तियों में पाँच दृश्य हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं :

1. तालाब में लहरियाँ लेती भूरी घास।
2. चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा (चाँद का प्रतिबिम्ब)।
3. किनारे पर पड़े पत्थर
4. मछली की टोह में ध्यानमग्न बगुला।
5. मछली पर झपटती काले माथे वाली चिड़िया।

कवि को नीचे एक तालाब दिखाई पड़ता है जिसमें छोटी-छोटी लहरें (लहरियाँ) उठ रही हैं। पोखर का तल नीला है पर उसमें भूरे रंग की कुछ घास भी उगी है और तालाब की लहरों में वह भी डोल रही है।

साँझ होने को आई है और तालाब की सतह पर चाँद का प्रतिबिंब चमक रहा है। उसकी चमक आँखों को चौंधिया देती है। चाँद के बारे में कवि की कल्पना देखिए–'एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा'। चाँद के लिए चाँदी का बड़ा-सा, गोल खंभा कहना ठीक है, परंतु क्या आप बता सकते हैं कि चाँद कवि को खंभा क्यों प्रतीत हुआ? जी, हाँ ! किसी तालाब या पोखर के हिलते जल में चाँद का प्रतिबिंब उसकी गहराई का भी बोध कराता है जबकि शांत जल में वह एक गोला-सा ही लगता। लहरों वाले तालाब में किरणों के फिसलने से उसमें लंबाई प्रतीत होती है। इसलिए कवि को लगता है–'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा।' –इसे ही कहते हैं कवि की सूक्ष्म दृष्टि और कल्पना।

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रहीं वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी !
चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल–
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

आइए अब देखें कि इस कविता की अगली तीन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है। क्या आप कभी तालाब के किनारे घूमने गए हैं? आपने ध्यान दिया होगा—तालाब के किनारे अनेक पत्थर भी होते हैं। कवि का ध्यान भी उन पत्थरों की ओर जाता है। कवि कल्पना करता है कि वे पत्थर तालाब के किनारे पड़े चुपचाप उसका पानी पी रहे हैं। कब से? वर्षों से, शायद जब से तालाब बना, तब से। कवि यहाँ पर तालाब और उसमें स्थित पत्थरों के प्राचीन साहचर्य को व्यक्त करता है। तालाब के पानी में रहने वाली अन्य वस्तुएँ गतिशील हैं, लेकिन पत्थर बिना हिले-डुले उसमें चुपचाप पड़े हुए हैं। इन्हें देखकर कवि कल्पना करता है कि ये पत्थर पता नहीं कितने समय से चुपचाप तालाब का पानी पी रहे हैं। पानी में डूबे पत्थरों में कवि को झुककर पानी पीते प्राणियों की याद आ रही होगी इसलिए यहाँ पर उसने पत्थरों का सुंदर मानवीकरण किया है। ये पत्थर निरंतर पानी पीने की मुद्रा में ही रहते हैं, इसलिए कवि विस्मय प्रकट करता है कि पता नहीं इनकी प्यास कब बुझेगी।

चित्र 8.2

कविता की आगे की पंक्तियों में तालाब के कुछ और दृश्य भी कवि का ध्यान खींचते हैं। जैसे— एक बगुला, जो पानी में टाँगें डुबाए, ध्यानमग्न सोया हुआ-सा खड़ा है। वह सचेत तो है, परंतु देखने वाले को ऐसे लगता है जैसे सो रहा है। पर ज्यों ही उसे कोई चंचल मछली दिखाई पड़ती है वह उसे तत्काल लपक कर गटक लेता है।

एक काले माथे वाली चालाक चिड़िया भी अपने सफ़ेद पंख फैला कर तालाब की सतह पर झपट कर पानी के भीतर से एक उजली सफ़ेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

कविता के पहले भाग के दृश्यों से अंतिम भाग के दृश्यों की तुलना कीजिए। आप क्या अंतर पाते हैं? पहले भाग में प्रकृति का लुभावना रूप था, पर यहाँ उसके कुछ कठोर किंतु वास्तविक रूप हैं।

प्रकृति की वास्तविकता और कठोरता का एक रूप आपने पढ़ा जो कविता में स्पष्ट रूप से उपस्थित है। किंतु क्या आप इस तथ्य से परिचित हैं कि अच्छी कविता वह मानी जाती है, जिसके कई आयाम हों, जो कई अर्थों को खोलती हो? आइए, इस कविता का एक दूसरा पक्ष भी समझ लेते हैं।